ईश्वरीय सेवा में सफल समर्पित दिव्य जीवनयात्रा ९९ से १०० की ओर......

# ॥ सुख शांति समृद्धि ॥

RNI No. : MHHIN / 2012 / 47712

संत महात्मा और महानुभावों द्वारा प्रेरणा की विद्यापीठ
सुख शांति समृद्धि ई-पत्रिका की बिना मूल्य प्राप्ति हेतु
व्हाट्सएप पर संदेश भेजे :
संपादक : जीतु सोमपुरा
मो.नं. 9324446487

वर्ष : ११ / हिन्दी मासिक / मुंबई, अप्रैल २०२३ संपादक : जीतु सोमपुरा / पृष्ठ - ८ / ई-पत्रिका

## दादी रतनमोहिनीजी को जन्मदिन की बधाई हो बधाई

## हम जिस से भी मिले सब को सुख दे, खुशियां बांटे, शुभ भावना दे, सब को स्नेह और सम्मान दे: राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी

जीतु सोमपुरा

मुंबई: समग्र विश्व में प्रसिध्द प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी ने अपने ९९ वे जन्मदिन के अवसर पर सुख शांति समृद्धि पत्रिका के पाठकों को दिए हुए एक विशिष्ठ संदेश में ओमशांति से प्रारंभ करते हुए बताया है की शांति के सागर, सुख दाता हम सर्व आत्माओं के परमपिता शिव परमात्मा की प्यारी संतान, आध्यात्म प्रेमी आत्मायें भाईयों और बहनों। आज के समय हर देश, हर वर्ग विश्व में शांति चाहते हैं। और स्वर्णिम दुनिया की एक झलक को देखने के लिए पूरा विश्व भी आतुर है।

हम सब एक परमपिता परमात्मा की संतान आपस में भाई-बहन, 'वन गॉड नव वर्ल्ड फैमिली' के हैं। इस स्मृति को बार-बार याद करने से आपस में भाईचारा बढ़ेगा। हम दुखहर्ता सुखकर्ता परमात्मा की संतान होने के नाते जिससे भी मिलें सबकों सुख दे, खुशियां बांटे, शुभ भावना दे, सबको स्नेह और सम्मान दें।

मेरा सर्व मानव कोटि से यही अनुरोध है कि किसी भी प्रकार के व्यसन और बुराईयों में न जाकर स्वयं को पवित्रता की शक्ति, श्रेष्ठ संकल्प और दिव्य गुणों से भरपूर करें।

**२५ मार्च को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी के दिव्य ९९ वे जन्मदिन को मनाया गया। इस अवसर पर सुख शांति समृद्धि ई-पत्रिका के विशेषांक में दादीजी का प्रेरक शुभकामना संदेश...**

अपने संदेश में उन्होंने कहा है कि अब तक की सारी जीवन-यात्रा ईश्वर की छत्रछाया में व्यतीत हुई है। हमें अपने भाग्य को निहार कर हर्ष होता है कि भक्तिकाल में किये गये पुण्य कर्मों का प्रत्यक्ष फल यह मिला कि हम इस अंतिम जन्म में भगवान के साथ रहे। उनकी श्रेष्ठ पालना में पले, उनकी ही मार्गदर्शना में हमारा जीवन आगे बढ़ा और अब भी निशिदिन उन्हों की ही प्रेरणाओं अनुसार उन्नति को पा रहे हैं। अब तो मन में यही शुभकामना है कि जल्दी से जल्दी अपनी सम्पन्न स्थिति को प्राप्त करके धरती पर आये भगवान को प्रत्यक्ष करें ताकि अंधकार में भटकती हुई करोड़ों आत्माएँ अपने प्राण प्यारे प्रभु से मिल सकें।

## दादी रतनमोहिनीजी का ९९ जन्मदिन सामाजिक सेवा के साथ मनाने के लिए भारत सरकार के नशामुक्त अभियान का शुभारंभ

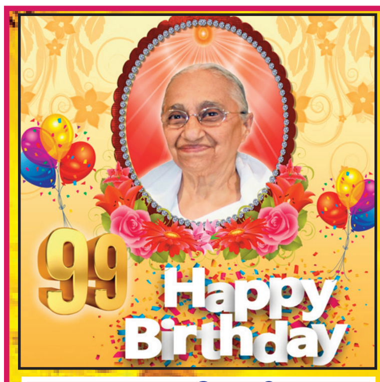


जीतु सोमपुरा

आबू: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी का ९९ जन्मदिन सामाजिक सेवा के साथ मनाने के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारी संस्था ने गुजरात के मुख्य मंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल की उपस्थिति में भारत सरकार के नशामुक्त अभियान का शुभारंभ किया। इस अभियान के बारे में कुछ दिन पूर्व ब्रह्माकुमारी संस्था ने भारत सरकार के साथ एमओयू किया था। इसी तरह एक ओर अभियान अंतर्गत २२ मार्च से भारत सरकार का जल जन अभियान सप्ताह भी ब्रह्माकुमारी संस्थाने मनाना आरंभ किया है। जन्मदिन उपलक्ष्य में ऐसे ही कई आध्यात्मिक-सामाजिक सेवा अभियान आनेवाले वर्ष के दौरान विश्व के ब्रह्माकुमारी केंद्रो द्वारा मनाए जायेंगे।

वंदनीय दादी रतनमोहिनीजी के ९९ जन्मदिन के अवसर पर केक कटिंग के वक्त दादी रतनमोहिनीजी की एक तरफ मुख्य मंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल, राजयोगिनी मोहिनी दीदी, राजयोगी बनारसीभाई, दादीजी की दूसरी ओर वरिष्ठ बी.के. लीला दीदी, राजयोगी मृत्युंजयभाई, राजयोगी डॉ. प्रतापभाई मिढ़ा तथा दोनो ओर आसपास में वरिष्ठ बी.के. भाई-बहनें।

ब्रह्माकुमारी संस्था के एक्जीक्यूटिव तथा ऑर्गनाइजिंग सेक्रेटरी वरिष्ठ राजयोगी ब्रह्माकुमार मृत्युंजयभाईजी ने दादीजी रतनमोहिनीजी का, गुजरात के मुख्य मंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल का, ब्रह्माकुमारी के एडिशनल चीफ तथा अमेरिका ओर कैरेबियन के ब्रह्माकुमारी केंद्रों के प्रमुख राजयोगिनी मोहिनीदीदीजी का सम्मान किया था।

प्रारंभ में इस अवसर पर मुंबई के कलाकारों के सुंदर नृत्य बाद ब्रह्माकुमारी के मेडिकल विंग के एक्जीक्यूटिव सेक्रेटरी राजयोगी बनारसीभाईजी ने अपने प्रवचन में बताया था की १४ करोड़ लोग नशामुक्ति के बारे में शपथ लेंगे।

कार्यक्रम के दौरान राजयोगी बी.के. हरिभाई के नेतृत्व में गोडलीवुड स्टूडियों ने बनाई दो सुंदर डॉक्यूमेंट्री प्रस्तुत की गई थी।

माउंट आबू के ग्लोबल हॉस्पिटल रिसर्च सेंटर के मेडिकल डायरेक्टर राजयोगी प्रतापभाई मिढ़ाजी ने कहा था की जीवन के खालीपन की वजह से दुनिया नशे का शिकार है। नशामुक्ति के विरुद्ध जागृति फैलाने के लिए भारत सरकार

**आबू के ब्रह्माकुमारी मुख्यालय में गुजरात के मुख्य मंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल ने दादी रतनमोहिनीजी को जन्मदिन दिन की बधाई ओर शुभकामना दी...**

(अनुसंधान पृष्ठ ७ पे)

मोबाइल पर सुख शांति समृद्धि ई-पत्रिका बिना मूल्य प्राप्ति हेतु व्हाट्सएप पर संदेश भेजे। मो. 9324446487

ईश्वरीय सेवा की दिव्य जीवन यात्रा

# विश्व की लाखों आत्माओं के जीवन में ज्ञान और गुणो का दीप जगाने वाली राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनीजी

जीतु सोमपुरा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका वरिष्ठ राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, नाम के अनुरुप उनका स्वरूप, सर्वगुणों रुपी रत्नो को मोह कर अपने जीवन मे धारण कर रत्नमोहिनी बनने वाली दादीजी विश्व की सभी आत्माओं के लिए आध्यात्मिक और मूल्यों से परिपूर्ण जीवन वाली आदर्श स्वरुप है। उनकी किशोर अवस्था में ही ज्ञान में बढ़ती हुई रुचि देखकर ब्रह्मा बाबा कई बार कहते थे, रत्न बच्ची, तू तो है ही रत्नों की खान।

सर्वशक्तिवान परमात्मा की अनुभूति उन्हे बचपन से ही हुई। उनका जन्म २५/३/१९२५ में सिंध हैदराबाद में हुआ। आज ९९ वर्ष की आयु में भी आप का तन मन युवाओं जैसे ओज और तेज से दीप्त है। आप हंसमुख, बेहद मिलनसार, सर्व के दिलों की बात सुनने वाली, समाधान देने वाली तथा क्षण क्षण ईश्वरीय सेवा मे सफल करती है। दादी जी ने ईश्वरीय ज्ञान और योग की गहराई को सभी आत्माओं को अनुभव करा कर विश्व की लाखों आत्माओं के जीवन में ज्ञान और गुणों का दीप जगाया।

मुंबई सहित भारत के अनेक स्थानों पर तथा विभिन्न देशों में वर्षों तक अपनी निस्वार्थ ईश्वरीय सेवाएं प्रदान की है। १९५४ में जापान के विश्व शांति सम्मेलन में विश्व के धर्मो के प्रतिनिधिओ ने हिस्सा लिया था। जिनमें ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का उन्होंने कुशल प्रतिनिधित्व किया था। दादीजी एक कुशल वक्ता है। वह किसी भी विषय पर घंटो चर्चा कर सकते है। दादीजी ने विभिन्न विषयों पर समय प्रति समय रेडियो और दूरदर्शन पर साक्षात्कार तथा वार्ता प्रस्तुत की हैं।

समग्र विश्व में ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा ईश्वरीय संदेश के प्रचार प्रसार में व्यस्त विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहनी जी की सेवा में पर्सनल एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट के कार्यरत तपस्वी भाई-बहन दिन हो या रात अद्भुत पुरूषार्थ करते है। दादीजी के लेफ्ट में मुख्य सचिव शांत कृष्णाभाईजी, राजनभाई, गोवर्धनभाई, हरिशभाई, राइट में ब्रह्माकुमारी बहनें उपर लीलादीदी, लक्ष्मीदीदी, नीचे पद्मादीदी, दीपादीदी, स्नेहलदीदी, नेहादीदी, सुनंदादीदी...

दादीजी को विभिन्न संस्थाओं द्वारा समय समय पर उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया है। भारत सरकार द्वारा

> ब्रह्मा बाबा कई बार कहते थे, रत्न बच्ची, तू तो है ही रत्नों की खान।

श्रेष्ठ नारी के रूप में सम्मानित किया गया हैं। गुलबर्गा यूनिवर्सिटी तथा सेन्ट पीटर्सबर्ग (रशिया)की यूनिवर्सिटी ने आपको डी. लिट. से नवाज़ा है। हाल ही में पुणे के सूर्य ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूट ने द संत ऑफ मॉडर्न इंडिया अवॉर्ड से सम्मानित किया था।

दादी रतनमोहिनी जी ने अपने ९९ वर्ष की उम्र में से ८७ वर्ष पूरी तरह से अध्यात्म, राजयोग, ध्यान और मानव मात्र की सेवा में दिया है। उनके साह्निध्य से आज देश विदेश की ४६ हजार से ज्यादा बहनों ने इस संस्थान में समर्पित होने का गौरव प्राप्त किया है। दादी रतनमोहिनी जी ब्रह्माकुमारी संस्थान के स्थापना काल की सदस्यों में से एक है। दादी के निर्देशन में कई विशाल पदयात्राओं, रैलियों के जरिये करोड़ो लोगों में भारतीय संस्कृति और मूल्यों को प्रेरित करने में प्रमुख भूमिका रही है। इसके साथ साथ विदेश में ईश्वरीय सेवाओ का विस्तार करने में दादीजीओ की महत्वपूर्ण भूमिकाओ में भी उनका योगदान रहा है।

## प्रश्न : परिवार का अर्थ क्या है?

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :**

परिवार का अर्थ है कि सभी एक दूसरे के प्यार में बँधे हुए है। जैसे एक बाल दूसरे बाल से अलग होते हुए भी एक साथ रहते है उसी प्रकार यदि सारे विश्व को परिवार के रुप में स्वीकार करते है। तब यह अपने पन की भावना अपने आप आती है।

## प्रश्न : बुढ़ापे में क्या करें ?

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :**

शरीर में आयु के अनुसार परिवर्तन आता है, उसी प्रकार सृष्टि में भी परिवर्तन होता रहता है। बचपन में शरीर बहुत सुंदर लगता है, बुढ़ापे में शरीर की सुंदरता समाप्त हो जाती है इस समय सर्व के प्रति अपने पवित्र संकल्प, शुभ भावना और शुभ कामना के द्वारा सृष्टि को बेहतर और सुंदर बना सकते है।

## प्रश्न : हमारी प्राप्तियां कैसे समाप्त होती है ?

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :**

मोटे रुप से सिर्फ ५ विकारों की बात करते है, लेकिन उनके बहुत सारे बाल-बच्चें हैं। हमें सूक्ष्म अटेन्शन रखने की जरुरत है कि हमें कोई भी इच्छा अहंकार नहीं होना चाहिए कि हमने बहुत बडी सफल घटना को अंजाम हासिल किया है। यह एक संकल्प मात्र भी नहीं उठना चाहिए, नहीं तो इससे प्राप्तियाँ समाप्त हो जाती है।

**दादीजी रतनमोहिनीजी:** जहाँ प्रकाश है वहाँ अंधेरा नहीं होता उसी तरह से बेकार और नकारात्मक विचार सिर्फ एक शुद्ध और सकारात्मक मन की कमी है, दिन भर में हर क्षण की जाँच करें और शुद्ध और सकारात्मक विचारों के साथ स्वयं को फिर से भरपूर करें।

दूसरों की कमजोरियों के बारे में सौचने में अपना किमती समय बर्बाद ना करें। चलो अपने दिमाग को साफ करने में अपना समय सफल करें।

# राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी ने मुरली लिखने की शुरुआत की थी

**प्रश्न:** ब्रह्माकुमारी संस्था के यज्ञ में मुरली लिखने की शुरुआत आप द्वारा हुई?

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :**

जी हा, मुरली लिखने की शुरुआत करने की निमित्त मैं बनी। यह भी एक दिलचस्प प्रसंग है।

एक दिन ब्रह्मा बाबा गार्डन में टहल रहे थे। मै गार्डन में बैठ कुछ लिख रही थी। साथ में एक बहन भी बैठी थी। बाबा पीछे से अचानक आते है। देखते है,

बच्ची, कुछ लिख रही है। बाबा को देखकर मैं थोड़ा गभरा गई। फिर बाबा ने पूछा - बच्ची, क्या लिख रही हो? मैंने कहा- बाबा, वो हम... वो हम.. बाबा बोले, बताओ बच्ची, क्या लिख रही थी। मैंने बाबा को लिखा हुआ दिखाकर कहा - बाबा, यह आज की मुरली है। आलमाइटी बाबा से हमने जो मुरली सुनी, वे पॉइन्ट्स लिखे है। बाबा ने पन्ने पलटते हुए खुश होकर कहा- अच्छा, यह तो बड़ी अच्छी बात है। बाबा के जो अनन्य बच्चे दूर-दूर रहते है, उनके लिए यह गर्म-गर्म हलुवा है। ये बाबा सभी बच्चों को भेजेगा। बाबा को ही पढ़ना इतना अच्छा लग रहा है तो बच्चो को कितना अच्छा लगेगा। जिन्हों ने ये महावाक्य नहीं सुने, उनके लिए ये हीरे के समान है, ये एक एक ज्ञान रत्न उनका पदमा पदम भाग्य बनायेगा।

उसके बाद बाबा ने दादियो को मुरली लिखने के लिए नियुक्त किया। इस विधि से मुरली लिखना और फिर सेवा केन्द्रों पर भेजना प्रारंभ हुआ।

> परमपिता निराकार ज्योतिबिंदु शिव परमात्मा ने साकार माध्यम ब्रह्मा बाबा के द्वारा जो महावाक्य उच्चारण किए वो है ज्ञान मुरली। आज भी ये दिव्य ज्ञान मुरली से समग्र विश्व में संस्था के ८५०० हज़ार केन्द्रों में लाखो विद्यार्थी लाभान्वित होते है। ये मुरली लिखने का आरंभ राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी ने कैसे किया वो उन्ही के पास से जानते है.....

## जीवन के कठिन दौर में ब्रह्माकुमारी विद्यालय से जुड़ने के बाद सकारात्मक बदलाव आया : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मूजी

भारत के माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी और दादी रतनमोहिनी जी के बीच आध्यात्मिक चर्चा हो रही थी तब दादीजी ने ब्रह्मा बाबा का चित्र उनको भेंट किया उस वक्त की तस्वीर। आबू में ब्रह्माकुमारी के मुख्यालय की मुलाकात के दौरान नारी सशक्तिकरण के प्रतीक मुर्मू जी ने बताया की उनके जीवन में जब कठिन दौर आया तब वो ब्रह्माकुमारी विद्यालय से जुड़ी थी और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आया था।

## कठीन परिस्थितियां हमें मजबूत और स्थिर बनाने के लिए आती है : दादी रतनमोहिनीजी

- आपके संकल्प, बोल, व्यवहार और हर कर्म खुशी फैलाये एसे होने चाहिये।
- दृढ संकल्प विघ्नों को तोडता है जो मुश्किले पैदा करते है।
- हर सुबह कुछ पल मौन, सकारात्मक और शक्तिशाली संकल्प मन को देने से आपका मन स्वच्छ और स्वस्थ रहेगा।
- अपने आपको हल्का रखने के लिए लोगों से अपेक्षा ना रखें कि वे आपके जैसे होगें। उसके बदले उन्हें उसी रुप में स्वीकार करें जैसे वे हैं।
- हर्षितमुख आत्मा सदा उर्जावान रहता है वह दूसरों के चहरे पर मुस्कान ले आता है।
- आत्मनियंत्रण का अर्थ है कि मेरे विचारों, समझ और भावनाओं पर अधिकार प्राप्त करना।
- मन को निगेटिविटी से मुक्त रखने के लिए विशेषता के दृश्य को देखना चाहिए।

## हमारे आपसी संबंध कैसे बढ़े और मजबूत रहे ?

**- दादी रतनमोहिनी जी**

- सम्मान मुझे माँगने से नहीं मिलेगा, लेकिन जब मैं स्वयं को और दूसरों का सम्मान करूँगी तो स्वतः मुझे सम्मान प्राप्त होगा।
- धैर्यता शांति से भरपूर मन का प्रतिबिंब है।
- सही जागरुकता शक्ति लाती है आप सदैव जारुक रहें कि मैं एक श्रेष्ठ और शक्तिशाली आत्मा हूँ।
- हमारी चेतना के अंदर गहराई में शांति का सागर है।
- जीवन में समय और संकल्प बहुत महत्त्वपूर्ण खजाने हैं। हमेशा ध्यान से किमती खजानों को सार्थक तरीके से उपयोग करना है।
- आत्मा में निहित मूलगुणों को खोजने के लिए आत्मा को आध्यात्मिक छूट दें। आत्मा को बाहर कहीं भी जाने की आवश्यकता नहीं है, सिर्फ अपने अंदर की ओर ले जाये।
- नकारात्मक से मन को मुक्त करने के लिए, सतगुणों को देखना शुरु करें।

## डॉ. नलिनी दीदीजी: हर पल विजय की ओर ले जाए ऐसी प्रेरणादायी विजयी योद्धा दादी माँ रतनमोहिनीजी

दिनांक: १० मार्च, २०२३

**वरिष्ठ राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी डॉ. नलिनी दीदीजी (मुंबई - घाटकोपर):** दादी रतन मोहिनी... नाम में ही जिनके रतन समाये हो, आप इस विश्व विद्यालय का वो अनमोल रतन है जो अपनी विशेष प्रतिभा से चमकती है और जो अपनी पवित्रता की विशेषता से इस महान विश्वविद्यालय के संयम, नियम, कायदे, मर्यादा और अनुशासनता का प्रतीक है।

'मैं जब ८-९ वी कक्षा में थी, तब से ब्रह्मा कुमारजी से जुडी हूँ और १३-१४ साल की अल्प आयु में इस आध्यात्मिक यात्रा की मैंने शुरुवात की। इस साहस युक्त यात्रा में कई उबड़-खाबड़ रास्ते आये, समस्या रूपी पहाड़ आये, जीवन रूपी समुन्दर में शांत, स्थैर्यम लहरों के साथ साथ उछल खाती, तूफानी, मिजाज बदलती लहरों का सामना करना पड़ा...' मगर इन सभी परिस्थितियों में एक सुलझी हुई, सशक्त, प्रेरणादायी, हिम्मतवान, विजयी योद्धा, जो हर वक्त, हर पल विजय की ओर ही निश्चित रूप से ले जाए, ऐसी प्यारी 'माँ'. कई फलदायक शिक्षाएं देने वाली 'शिक्षक', मार्ग प्रदर्शक 'गुरु' पक्की 'सहेली', जिसने प्रत्येक उंच-नीच की परिस्थितियों में न केवल मेरा साथ निभाया, अपितु मुझे प्रोत्साहित करके आगे भी बढाया, और आज भी उनकी ही मेहनत का, प्यार का, शिक्षा का साक्षात्कार-मेरे अलौकिक जीवन की प्राप्तियां है.. ऐसे मेरे जीवन को संवारने वाली परम पूजनीय, श्रद्धेय, प्रभु-प्रिय, लोकप्रिय हस्ती 'रतन मोहिनी दादी माँ' हैं।

ऐसी बहुमुखी प्रतिभावाली, अनेकानेक आध्यात्मिक खजानों की दाता, 'पूज्य देवी स्वरूपा आराध्य दादी माँ' को उनके जन्मदिन पर ढेर सारी शुभकामनाएं। आपको प्रणाम, वंदन, अभिवादन...

## हमें स्वयं में नम्रता, सहनशीलता, धैर्य, संतुष्टता, मधुरता आदि दिव्य गुणों को धारण करने का पुरुषार्थ करना चाहिए : दादी रतनमोहिनी जी

**प्रश्न : प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मूलभूत आध्यात्मिक शिक्षाएं कौन कौन सी है ?**

**दादी रतनमोहिनीजी :** ब्रह्माकुमारी संस्था आज भारत और विश्व के लगभग १४८ देशों से ज्यादा देशोमें ८५०० से भी अधिक शाखाओं के साथ एक विशाल वटवृक्ष की भाँति विकसित हो गई है। इन सेवाकेन्द्रों पर लगभग १० लाख से ज्यादा विद्यार्थी प्रतिदिन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण करते हैं और राजयोग का अभ्यास करते हैं। यहाँ की कुछ प्रमुख शिक्षाएँ इस प्रकार हैं:

- परमात्मा एक हैं, वे निराकार एवं अनादि हैं। वे विश्व की सर्वशक्तिमान सत्ता हैं और ज्ञान के सागर हैं।
- परमात्मा विश्व की सर्व आत्माओं के निराकार माता-पिता हैं। परमात्मा के साथ संबंध की स्मृति और परमात्मा के प्रति प्रेम को 'राजयोग' कहा जाता हैं। राजयोग का अभ्यास व्यक्ति को आध्यात्मिक परिवर्तन की शक्ति प्रदान करता है। इसके अभ्यास से व्यक्ति के संस्कार शुद्ध बनते हैं, चारित्रिक उत्थान होता है एवं अनेक शारीरिक और आध्यात्मिक लाभ मिलते हैं।

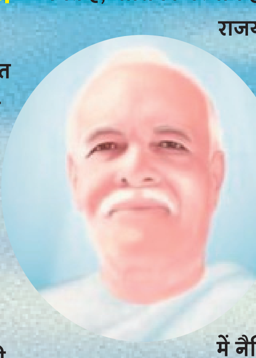

राजयोग से मानसिक तनावों से मुक्ति मिलती है तथा नकारात्मक संकल्पों को समाप्त करने की मानसिक शक्ति भी प्राप्त होती हैं।

- हमें स्वयं में नम्रता, सहनशीलता, धैर्य, संतुष्टता, मधुरता आदि दिव्य गुणों को धारण करने का पुरुषार्थ करना चाहिए।
- हमें स्वयं को पूर्णतया दिव्य बनाकर आगामी सतयुग के लिए तैयार करना है।
- इस सत्य ईश्वरीय ज्ञान को, स्वयं परमात्मा ने मनुष्य तन में अवतरित हो, उसको साकार माध्यम बनाकर दिया है। वे अपना यह दिव्य कर्तव्य कलियुग के अंत में करते हैं जबकि विश्व में नैतिक और आध्मात्मिक मूल्यों का पतन हो चुका होता है और सतयुग की पुनर्स्थापना का समय होता है।

मोबाइल पर सुख शांति समृद्धि ई-पत्रिका बिना मूल्य प्राप्ति हेतु व्हाट्सएप पर संदेश भेजे। मो. 9324446487

# दादीजी का अथक प्रयास रहा है की ब्रह्माकुमारी संस्था के साथ जुड़ा हर व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास हो तथा राष्ट्र निर्माण के कार्य में वे अपना तन, मन, धन सफल करे: बी.के. चन्द्रिकाबहन

**बीके चन्द्रिकाबहन, उपाध्यक्ष, युवा प्रभाग (RERF):** हमें ख़ुशी एवं बहुत ही गौरव का भी अनुभव हो रहा है कि आप के सुख शांति समृद्धि मैगेज़ीन द्वारा विश्व विख्यात संस्था 'ब्रह्माकुमारीज़' की स्थापना के साकार माध्यम पिताश्री ब्रह्मा बाबा, प्रथम मुख्य प्रशासिका जगदम्बा सरस्वतीजी, मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाश मणिजी, दादी जानकीजी, दादी रत्नमोहिनीजी आदि महान विभूतियों के जीवन चरित्र को जन-जन तक पहुचाने का सत्कार्य सम्पन्न किया और अभी भी कर रहे है। आपने ब्रह्माकुमारी की पीस ऑफ माईन्ड टीवी चैनल को प्रारंभ करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आपको पदमापदम अभिनंदन, अभिवादन।

दादीजी का जीवन हमारे लिए बहुत बड़ा सन्देश रहा है। वे कभी भी सीधा आदेश देते नहीं है। वे हमें दिव्य अलौकिक रूप से शिक्षाएं देकर प्रेरित करते हैं। हमेशा आपस में चर्चा, विचार-विमर्श, एक दुसरे के विचारों को सम्मान देते हुए प्रोजेक्ट को बनाना सिखाया है। जिसके कारण सभी में बहुत ही उमंग रहता है, हरेक को अपने तथा औरों के प्रति सम्मान की

भावना रहती है। परिणाम स्वरूप संगठित रूप में हर प्रोजेक्ट बहुत ही आसानी से सम्पन्न हो जाता है।

जिसमें विशेष तौर पर दो बार पदयात्रा, दो बार साइकल यात्रा, मेटाडोर यात्रा, बस अभियान, चार बार युवा फेस्टिवल सम्मिलित है।

जिससे लाखो विद्यार्थियो में मूल्यनिष्ठ जीवन के प्रति जागृति आई। जीवन कौशल्य प्रशिक्षण शिविर द्वारा हजारों किशोरों के जीवन को सकारात्मक, शक्तिशाली बनाने में मदद मिली। तो नेशनल इंटीग्रेशन कैम्प के माध्यम से हजारो युवाओं को राष्ट्र प्रेम जागृत करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ. यह सिर्फ दादीजी की दीर्घ दृष्टि, प्रेरणा तथा शुभ भावना का ही परिणाम रहा है।

आज भी दादीजी की शिक्षाएं, प्रेरणाएं, शुभ भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान समय में ११ जून को भारत सरकार के G20 अंतर्गत Y20 में जुड़ने का ऐतिहासिक शुभ अवसर हमे प्राप्त हुआ है। Y20 के माध्यम से भारत हजारों युवाओं के दिलों को समझने का, देश के प्रति रही भावनाओं को जानने का, देश के प्रगति के लिए हमे क्या कदम उठाने चाहिए? आदि विचारों को समझने का हमारे लिए यह शुभ अवसर है।

आज दादीजी के प्रभावशाली दिव्य व्यक्तित्व से प्रभावित हजारों ब्रह्माकुमारी बहेने सारे विश्व की सेवा में उपस्थित है। दादीजी का ही अथक प्रयास रहा है कि युवा प्रभाग एक ऐसा सफल प्लैटफॉर्म बने जिससे सिर्फ युवा ही नहीं, लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ के साथ जुड़ा हर व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास हो, राष्ट्र निर्माण के कार्य में वे अपना तन-मन-धन सफल करें।

# लोक कल्याण के लिए तन, मन, धन से अर्पण करने वाले व्यक्तित्व की धनी है दादी रतनमोहिनीजी: बी.के. शान्त कृष्णा

**प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय कि मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी जी के मुख्य सचिव बी.के. शान्त कृष्णाभाईजी :** हम सब की अति प्रिय एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी को ९९ जन्मदिन पर दिल व जान, सिख व प्रेम से अभिनंदन।इतने वर्षो का आपका त्यागी, तपस्वी जीवन एक मिसाल है। आप वो महान आत्मा है जिन पर स्वयं भगवान को नाज है। आप महज १२ वर्ष की छोटी सी आयु में यज्ञ में आई और समर्पित हो गई। पिछले ८७ वर्ष जो आपने निरंतर ईश्वरीय सानिध्य, ईश्वर प्रेम की छत्रछाया में बितायें, यह एक अनुपम उपलब्धि है। आपके ममतामयी आंचल की छांव

दादीजी के साथ उनके मुख्य सचिव बी.के. कृष्णाभाईजी

में सेंकडो बाल ब्रह्मचारी बहनें पवित्रता और योग के रास्ते पर चल स्व कल्याण के साथ साथ विश्व कल्याण कर रही है।

ऐसी उमंग-उत्साह से सदा ओतप्रोत रह, युवा की परिभाषा को जीवंत करने वाली राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी को पहली बार १९८४ में मिलने का मोका मिला। और १९८५ में युवा पदयात्रा के समय सात साथ में सेवा करने का मोका मिला।

जो २६ साल से दादीजी के साथ दादीजी का एडमिनिस्ट्रेशन ऑफिस में सेवा करने का परम सौभाग्य दादीजी ने दिया। दादीजी का क्षेत्र न केवल ज्ञान, योग का है, साथ साथ एक उज्वल विश्व के लिए विधिविधान का मूल आधार सिखाने वाली, अवस्था एवं व्यवस्था को नये राजतंत्र में लानी वाली एक राजगुरु भी है, साथ साथ एक ऋषि होकर अंतरमुखी बन स्वयं के भीतर जाकर अपने को जांकने की अनुभवी और अन्य को भी अनुभवी बनाने वाली ज्ञान एवं कर्म कि दिशा दिखाने वाली दादी है।

व्यर्थ कर्म का ज्ञान ही नहीं है। परचिंतन, परदर्शन परपंच से पर रहने वाली एक ओजस्विनी है हमारी दादीजी। गुणोंकी खान है। कोई भी विषय पर गहराई तक अपना अनुभव युक्त विचार व्यक्त करने वाली धनी है।

दादीजी के साथ रहे तो कुछ न कुछ शिक्षाओं से भरपूर हो सकते है। कई बार उनकी विचारधारा की लहर को परखना, समझना फिर उस रास्ते पर चलने के लिए पुरुषार्थ करना पडता है। आप जो रूप में दादीजी को अनुभव करना चाहिए तो भी उस रूप में अनुभव कर सकते हैं।

कोई भी संस्था व समाज आगे बढ़ने के लिए तीन बातों के उपर अनुशासन प्रशासन की आवश्यकता है, वह है तन, मन, धन। यह तीनों सहि विधि से प्रगति पथ पर ले जानेवाले ही सहि शासक बन सकते है। यह तीनों लोक कल्याण के लिए अर्पण करने वाले व्यक्तित्व की धनी है दादीजी।

# बहुत कुछ है यादों के आंगन में कहां से शुरु करूं कहां खत्म : मनोरमाबहन

**प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के धार्मिक प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा वरिष्ठ तेजस्वीनी ब्रह्माकुमारी मनोरमाबहन:** किशोर अवस्था में ही मेघावी बुद्धि ने प्रभु को पहचाना। दिव्यता आकर्षण का आधार बनी। बाल्यकाल से ही एकाग्रता-अर्न्तमुखता उनका श्रृंगार थी, जो हर लक्ष्य को सफलता में बदल देती। उनकी अनुशासनप्रियता उन्हें सबसे अलग करती थी, जिससे वो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में एक अलग पहचान बन गयी। होनहार बिरवान के होत चिकने पात। प्रथम बार विश्वस्तरीय धर्म सम्मेलन में जापान में प्रतिनिधि मण्डल गया, वहाँ उन्हें भेजा गया, जहाँ उन्होंने न केवल प्रतिनिधित्व किया वरन् अपनी अमिट छाप भी छोड़ी।

संतुलन भरा व्यक्तित्व जहाँ एक ओर कन्याओं को आध्यात्म सम्पन्न जीवन का प्रशिक्षण देती तो दूसरी ओर असीम स्नेह लुटाती मैंने उनके व्यक्तित्व में जहाँ मर्यादाओं के पालन करने में, करवाने में दृढ़ता देखी, वहीं किसी भी कन्या को यदि इस आध्यात्म पथ पर कष्ट हो,

समस्या हो, विघ्न हो तो हृदय में दया, स्नेह का स्रोत स्पष्ट दिखायी देता तो वो व्यक्तिगत विश्राम का समय त्याग कर उनका समाधान करती। इस आध्यात्म की बागिया का हर फूल उन्हें बहुत प्रिय है। दादीजी की पारखी दृष्टि ने यज्ञ में अनकों युवाओं की प्रतिमा को तरासा जो आज अपने अनुकरणीय व्यक्तित्व के साथ यज्ञ के जिम्मेवार रतन है। दादीजी 'रतन मोहिनी' नाम का समर्थ व्यक्तित्व है। आपने राजस्थान की मरुभूमि में शतक लगायी, जयपुर में पल्लवित होती सेवायें जैसलमेर तक स्पर्श करती है तो कहीं बिकानेर की हवेलियों को गुलजार करती हैं।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि दादीजी यज्ञ की ऊर्जा, यज्ञ का अनुशासन, नयी पीढ़ी को गढ़ने में कुशल शिल्पी की भूमिका निभाते आज पूरा यज्ञ संभाल रही है। हमारी मुख्य प्रशासिका है।

स्वमान रखना भी उन्होंने ही सिखाया। मैं छोटा सा बैच जो यज्ञ से ही मिला था, ताम्बे का था, मुझे बहुत प्रिय था, लगा कर स्टेज पर पहुंच गयी दादी ने वहीं से वापस किया बोला टीचर्स बैच लगाइये मेरा स्वमान मुझे याद दिलाया। वचनबद्ध करके बैच लगवाया जो आज तक उसी भाव से लगा कर उन्हें याद करती हूँ। बहुत कुछ है यादों के आंगन में कहाँ शुरुं करुँ कहाँ खत्म समझ ही नहीं आता। आज बस इतना ही सुभ कामनाओं के साथ।

## राजयोगिनी दादीजी रतनमोहिनीजी:

- समय का सही उपयोग करने के लिए आत्मा को हर कल का महत्व समझना आवश्यक है।
- जितना अधिक हम अपने सत्य स्वरुप को जानेंगे-पहचानेंगे, उतना ही ख़ुशी और शांति में रहना आसान हो जायेंगा।
- सिर्फ शरीर को भोजन की आवश्यकता नहीं होती है। आत्मा को भी भोजन की जरुरत होती है, जिससे कि वह सदैव स्वस्थ रहे। आत्मा का भोजन ध्यान है।
- दृढ संकल्प की शक्ति सदैव आपके साथ रहेगी तो सफलता आपके गले की माला बन जायेगी।

## मेरा सम्मान राजयोग प्रशिक्षण का और विद्यालय से जुडे भाई-बहनों का सम्मान है : राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी

**प्रश्न:** आप को अनेक बार विभिन्न महत्वपूर्ण संगठनों द्वारा सम्मान मिला है, अवार्ड्स दिए गए है इस बारे में आप क्या कहेना चाहेंगे?

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :** जो सम्मान मुझे मिला है यह केवल मेरा ही सम्मान नही है, अपितु ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा दीये जा रहे आध्यात्मिक, नैतिक, जीवनमूल्यों तथा राजयोग प्रशिक्षण का सम्मान है। विद्यालय से जुड़े सभी भाई-बहेनों का सम्मान है। जो शांति एवं पवित्रता को स्वधर्म जानकर, पहेचानकर स्वधर्म में स्थित होकर व्यवहार में ला रहे है।

वर्तमान समय समाज में आध्यात्मिक पुनरुत्थान, नैतिक क्रांति, चरित्र निर्माण, शांति एवं सद्भावना की पुर्नस्थापना की अत्यंत आवश्यकता है। इस महान कार्य में ब्रह्मकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। मुझे आशा है की अनेक विश्वविद्यालयों के लिए ये प्रेरणास्त्रोत बनेगा।

## बाबा ने हमारे अंदर यह भावना कूट-कूट कर भरी की नारी स्वर्ग का द्वार है: दादी रतनमोहिनीजी

**प्रश्न:** कुछ लोगों के मन में ये प्रश्न है की नारी नर्क का द्वार है की स्वर्ग का द्वार है? आप इस बारे में क्या कहेना चाहेंगे?

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :** कहते है की पुरुष में ३२ लक्षण और नारी में ३६ लक्षण होते है। पुरुष की तुलना नारी में गुण और शक्तियाँ अधिक होती है। परिवार के प्रति प्रेम भाव, पालना की शक्ति, समाने की शक्ति व सहनशक्ति भी होती है। ब्रह्मा बाबा के जीवन में तो हमने देखा कि वे नारी को बहुत ऊंची दृष्टि से देखते थे और अपार सम्मान देते थे। नारी शक्ति के प्रति ब्रह्मा बाबा के अटूट निश्चय का ही परिणाम था कि शिव बाबा के आदेश अनुसार उन्होंने अपनी समस्त चल, अचल सम्पत्ति माताओं-बहनों का ट्रस्ट बनाकर ईश्वरीय विश्वविद्यालय को समर्पित कर दी। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं। आज इस विश्वविद्यालय की दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति का आधार महिला नेतृत्व ही है। कुछ प्रवचनकारो के प्रवचनों में तो हम सुनते आए थे की नारी नर्क का द्वार है। बाबा ने हमारे अंदर यह भावना कूट-कूट कर भरी की नारी स्वर्ग का द्वार है। यह तो धर्मग्रंथो में लिखा है कि नारी सम्मानिय बनेगी, पूजित बनेगी तो संसार के लिए स्वर्ग के द्वार खुल जायेंगे।

## दादी रतनमोहिनी जी ने अपना संकल्प और समय कभी बर्बाद नहीं किया : राजयोगिनी गीताबहन

**ब्रह्माकुमारी संस्थान के आबू मुख्यालय में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी गीताबहन:** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के यज्ञ के आदि रत्न सम्मानीय दादी रतनमोहिनी जी को प्रारंभ से ही जानती हूं क्योंकि पिछले ५१ वर्षो से मैं ज्ञान में चल रही हूं। दादी जी बहोत ही बौद्धिक है। साथ साथ बहोत ही शक्तिशाली आध्यात्मिक है। बहोत ही शुद्ध आत्मा है। ज्ञान की बहोत लगन है। शुरु से ही दादीजी का मुरली पढ़ना, लिखना, सालो से चलता रहा है। इतनी आयु हो गई है, अब भी मुरली रोज पढ़ती है और सुनाती है। तपस्या में भी अपना सुंदर अनुभव बताती है। अभी भी इनके लोकयुक्त और दिव्य व्यक्तित्व के दर्शन मात्र से लोग काफी प्रभावित होते है। इन्हों ने अपनी जिंदगी में संकल्प और समय कभी बर्बाद नहीं किया। वर्षो तक पर्सनल ऑफिस के कार्यो में अति व्यस्त रही। सेंकडो ब्रह्माकुमारी बहेनों को एक या दुसरे सेंटर भेजकर सेट किया। वे युथ विंग की अध्यक्षा रही है। बहोत ही ब्रॉड माइंडेड है। बहोत ही विशाल हदय से आज की युवा पीढ़ी पर शंका वहेम ना कर के उनको स्वीकार और प्रोत्साहित करके आगे बढ़ाया है। बाबा ने यज्ञ की तरफ से जब भी जो जो सेवा के अच्छे मौके दिए दादी जी ने वो मौको को सफल किया। दादीजी को हिंदी और अंग्रेजी की अच्छी जानकारी है। विदेश में भी उन्होंने अच्छी सेवाए दी है। जो भी विषय उन्हें दिया जाय उस पर विस्तृत ढंग से सुंदर प्रवचन करती है।

अन्यो को सिखाया है। हमेशा वे दिनचर्या के अनुसार चले। कई बार भूख-प्यास छोड़कर अपना काम पूरा किया। मेरा सौभाग्य है की दादी जी के नजदीक रहेने का और इनके सेवाकार्य में मददगार बनने का मौका मिला है। दादी जी के ९९ वर्ष में भी बाबा दादीजी के चहेरे से, चलन से सेवा करा रहे है। हम सब के बीच अब एक ही दादीजी जीवंत है। जीन के तपस्या के बल से तथा जिनका होना ही यज्ञ को एकमत और संगठित बनाकर रखा हुआ है। ऐसी महान दादीजी अपनी आध्यात्मिक उर्जा से हम सब को चला रही है। आगे बढ़ा रही है।

## प्रश्न : आत्मा शक्तिशाली कैसे बने ?

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :** जितना हम भगवान का गुणगान करते है, उसके ज्ञान रत्नों को जीवन में लाने का प्रयास करते है उतनी आत्मा शक्तिशाली बनती है और शक्तिशाली आत्मा सारे विश्व में वायब्रेशन फैलाती है।

## प्रश्न : ओम शांति का अर्थ क्या है ?

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :** ओम शांति का अर्थ है, मैं शांत स्वरुप आत्मा हूँ। ओम शांति का अर्थ है, मैं परमात्मा की संतान हूँ। मैं आत्मा जो कि इन आँखों से देखती हूँ, जबकि हम समझते है कि मैं एक आत्मा हूँ, लेकिन दिनभर क्या हमें स्मृति रहता है।

## कई विशिष्ट अनुभव दादीजी के साथ मेरे रहे जो हमेशा मुझे याद रहेंगे: वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी सरला दीदी

**ब्रह्माकुमारी मीडिया प्रभाग की नॅशनल कॉर्डिनेटर वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी सरला दीदी :** जब से मैं ज्ञान में आई हु, यज्ञ की दादीयों को देखते हुए और उनके बारे में सुनते हुए, बहोत प्रभावित होती थी और गदगद अनुभव करती थी।

इस आत्मा को करीब २५ साल से बहुत अनोखे अनुभव होते रहे है। जब भी मे दादीजी के संपर्क में आती थी मुझे ऐसा लगता था की दादीजी कितने भाग्यशाली रहे। बाबा के कितने नजदीक रहकर उन्होंने अपना जीवन बिताया और पूरे कल्प की आध्यात्मिक संपत्ति बना लिया। इस बात पर मै थोडा असंतुष्ट अनुभव करती थी। मन ही मन मैं बाबा को

शिकायत भी करती थी की साकार बाबा का पालना मुझे थोडा भी नहीं मिला.....

मैं एक बार दादी जी से मिलने कोटेज में गई और पता चला की दादीजी राजस्थान सेवा पर जा रही है। सब विदेशी बहने भी दादीजी को विदाई देने बैठी थी। मैं एक कोने में बाबा की याद में बैठी और पता नहीं याद में आंसू आ रहे थे। दादीजी बाहर आते ही मेरे पास आई, एक अनोखी अनुभूति कराई। इस आत्मा को खास बाबा का पालना का अनुभव कराया और इतना संतुष्ट किया वो मै भूल नहीं सकती।

ऐसे कई विशिष्ट अनुभव दादीजी के साथ मेरे रहे जो हमेशा मुझे याद रहेंगे। बाबा को और दादीजी को शत शत नमन करती हूं और बधाई देती हूं।

आज भी ९९ वर्ष की आयु से सो वर्ष पूर्ण करने की ओर जा रही दादी रतनमोहिनी जी हरेक को मार्गदर्शित करने के लिए वक्त निकाल ही देती है। तस्वीर में आशीर्वचन देने के बाद वरिष्ठ बी.के. रामलखन भाई को सेब देते हुए....

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी:**

- विशेषताओं को देखने की दृष्टि मन को नकारात्मकता से मुक्त रखती है।
- अगर मेरी संतुष्टि संतुष्टता दूसरों की प्रशंसा पर आधारित है तो यह अस्थायी होगी।
- कठीन परिस्थितियाँ हमें मजबूत और स्थिर बनाने के लिए आती है।

मोबाइल पर सुख शांति समृद्धि ई-पत्रिका बिना मूल्य प्राप्ति हेतु व्हाट्सएप पर संदेश भेजे। मो. 9324446487

# दादी रतनमोहिनीजी जैसी महान विभूतियां इस सृष्टि मंच पर रहेंगी तो आसुरी प्रवृत्तियों का सफाया होगा: ब्रह्माकुमारी चंदा दीदी

**ब्रह्माकुमारी संस्थान की कुशल मंच संचालिका एवं प्रेरक उत्कृष्ट वक्ता बी.के. चंदा दीदी:** दादी रत्नमोहिनीजी एक सदी के करीब पहुंच चुकी अध्यात्म प्रज्ञा लोगों के आध्यात्मिक उत्थान में अपना पूरा जीवन न्योछावर करने वाली ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी साक्षात मां है, इन के सानिध्य में आने से ही ऊर्जा का संचार होने लगता है।

यज्ञ की स्थापना में उनकी शिरोमणि पवित्रता, घोर तपस्या, अटूट निशचय की जितनी महिमा की जाए उतनी ही कम है।

आपकी स्नेहमयी वृष्टि,<br>
मुख पर मीठी मुस्कान,<br>
मधुरवानी से अनेकों में<br>
खुशी का संचार करती है।

उज्वल व्यक्तित्व, अलौकिक आभा साकार रूप गुण मूर्त है, सदा मुस्कुराती, दिव्यता की झलक दिखाई देती है।

रोज बड़े ही प्रेम से परमात्मा ज्ञान मुरली सुनाकर, ज्ञान पालना देनेवाली दादी रतनमोहिनी ऐसी जीती-जागती मिसाल है जिनकी शक्ति दुनिया बदलने में सक्षम है।

आप कितनी बेमिसाल हो<br>
सबके लिए मिसाल हो<br>
परमात्मा ज्ञान रत्नों से<br>
करती मालामाल हो।

दादी ने अपना पूरा जीवन ही मानवता की सेवा में लगा दिया। अलौकिक आभा से भरपूर दादी कहती है हमारा जीवन लोगों की और परमात्मा की सेवा में अंत तक रहे। दुनिया के प्रत्येक मनुष्य परमात्मा के बच्चे हैं, सबका अधिकार है कि वह परमात्मा से शक्ति लेकर सुखी रहे।

दादीजी हम सबको सकारात्मक और रचनात्मक कार्यों को उमंग के साथ करने के लिए प्रेरित करती है। सदा उमंग उत्साह प्रसारित करने वाली यूथफुलनेस से भरपूर दादी जी को एवर यंग दादी भी कहते है।

दादी रतनमोहिनी जैसी महान विभूतियां इस सृष्टि मंच पर रहेंगी तो निश्चित तौर पर आसुरी प्रवृत्तियों का सफाया होगा।

उनकी आध्यात्मिक चेतना, उनका योग प्रकाश ऐसा है कि देखने वाले में भी आध्यात्मिक चेतना जाग उठती है। कम से कम थोड़े समय के लिए तो उनके तमोगुणी और रजोगुणी संस्कार बंद हो उनकी जगह सतोगुण का उदय होता है।

अनेक दिव्य अनुभूतियों से<br>
संपन है आप<br>
शांति ओर नम्रता के आभूषण है आप<br>
अनुभवों के अनमोल मोती है आप।

आज संपूर्ण ब्राह्मण परिवार दादी के दीर्घायु होने की कामना करते हैं। दादी का आशीष हम सब पर सदा यूं ही बना रहे।

**प्रश्न : दूसरों की कमियों का क्या करें?**

**दादी रतनमोहिनीजी :** दूसरों के कमियों को भी देखना नहीं है, यदि उन पर हमारा ध्यान भी जाता है तो उनसे प्रभावित नहीं होना है और उनके प्रभाव में आकर वैसा ही कर्म भी नहीं करना है। अगर एक बार वह कर्म कर लिया तो उसका फल कर्ता को भुगतना पडता है।

**प्रश्न : हम परमात्मा को कैसे प्रत्यक्ष कर सकते है ?**

**दादी रतनमोहिनीजी :** हम दैवी गुणों, कर्मो और अपने व्यवहार द्वारा परमात्मा को प्रत्यक्ष कर सकते है। जब हम परिवर्तन होते है तब विश्व स्वर्णिम दुनिया, स्वर्ग में परिवर्तन हो जायेगा और जहाँ हम राज्य करेंगे।

**निराकार परमपिता शिव परमात्मा,**
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संस्थापक

परमपिता शिव परमात्मा अति प्रिय, ज्योतिस्वरूप हैं। उनका कोई भी स्थूल आकार नहीं है और वे इस सांसारिक जन्म-मरण के चक्र से न्यारे हैं। वे सर्व आत्माओं के माता-पिता, बंधु-सखा तथा सत्य ज्ञान देने वाले सद्गुरु हैं। वे हमारे आध्यात्मिक मार्गदर्शक और शिक्षक भी हैं। उनसे सदैव प्रेम, शांति, दिव्य प्रकाश, आध्यात्मिक शक्ति तथा सुख की किरणें प्रस्फुटित होती रहती है। उन्होंने ही पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम से इस संस्था की १९३६ में स्थापना की है।

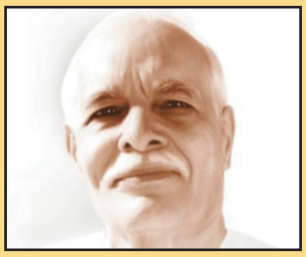

**प्रजापिता ब्रह्मा,**
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के साकार संस्थापक

हमारे अति प्रिय 'ब्रह्मा बाबा' शांति, पवित्रता, दिव्य ज्ञान और आध्यात्मिक शक्तियों के स्तम्भ थे।

वे बहुत ही विशाल हृदय, विस्तृत विचारधारा वाले और दूरांदेशी थे। वे उच्च कोटि के ज्ञानी थे। आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग के ऊपर प्रभुत्व के कारण उन्होंने निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी स्थिति को प्राप्त किया। परमात्मा के प्रति अगाध प्रेम एवं दृढ़ निश्चय ने उन्हें विघ्न-विनाशक बना दिया जिससे वे मायाजीत एवं कर्मातीत बन गए।

## अध्यात्म के द्वारा ही हमारे गुण और आदर्श को स्थापित किया जा सकता है

**प्रश्न: आज जब दुनिया आगे बढ रही है तब अध्यात्म क्यों जरूरी है इस बारे में हमें बताएं?**

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :**

जितनी दुनिया आगे बढी है, विकार, तमोप्रधानता भी और अधिक बढ़ी है। एक तरफ सुविधाएं बढ़ी है तो दूसरी तरफ चारित्रिक नुकसान हुआ है। पारिवारिक भावना खत्म हो रही है, एकाकिकपन बढ रहा है। मानव जीवन संस्कारो से रहित होता जा रहा है।

ऐसी विकट परिस्थितियों में अध्यात्म का महत्व कम होने की बजाए पहेले से अधिक बढ गया है। जो हमारे गुण और आदर्श होने चाहिए, जिनके कारण भारत का इतना ऊंचा नाम और मान था, आध्यात्मिकता के द्वारा ही फिर से उनको स्थापित किया जा सकता है। और जितना ही कलियुगी दुनिया को देखते जाओगे उतनी ही भगवान से प्रित बढ़ाते रहेनी चाहिए। अपने आप आप को अध्यात्म का महत्व समझ में आता है। दुनिया की तरफ आकर्षण नहीं जाता है। सुख शांति के सही स्वरूप का आनंद मिलते जाता है।

## राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी को कौन सी बातो का सपने में भी ख्याल नहीं आया?

**प्रश्न: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ऐसा क्या है जो दुनिया में कही नही है?**

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :**

यहां जो पारिवारिक भावना है कि हम सभी एक बाबा के बच्चे है, वो दुनिया में कही नही है।

हम जब ज्ञान में आये; यह बात है सन् १९३७ के दशक की। कैसे आये? किस चीज ने हमे आकर्षित किया? वो थी पवित्रता, सच्चाई, सादगी, शांति, ईश्वरीय प्रेम। १२ साल की छोटी सी आयु में भी हमे अपने जीवन की वैल्यू का पता था और बाबा के पास आने से हमे अनुभव हुआ कि जीवन इतना ऊँचा और श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। बस यही एक धुन लग गई की मुझे तो स्व कल्याण के साथ विश्व कल्याण करना है। संबंधो का प्यार, संसार का वैभव सब तुच्छ लगता था। कभी इन तुच्छ बातो का संकल्प क्या, सपने में भी ख्याल नहीं आया इतनी खुशी और संतुष्टि इस जीवन में पाई है और आज हम देखते है हजारों-लाखों बाबा के बच्चे आ रहे है, पा रहे है। पवित्र ज्ञान की धारा से जुड़ गए है। इसलिए यहां जो पारिवारिक भावना है कि हम सभी एक बाबा के बच्चे है, वो दुनिया में कही नहीं है।

## राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी:

**प्रश्न : समय को बर्बाद होने से कैसे रोके ?**

अगर हमने जीवन में सुनी हुई अच्छी बातों द्वारा अपने जीवन में परिवर्तन नहीं लाया तो इसका अर्थ है, हमने कुछ भी सुना नहीं और ही अपना समय बर्बाद कर दिया।

**प्रश्न : हमारे अंदर से खुशी कैसे आए?**

हम भगवान की संतान है इस एक सत्य से हमारे अंदर खुशी आ जाती है। परमात्मा ने हमें यह सिखाया है कि सारा विश्व एक परिवार है।

**प्रश्न : हम सदैव अपने को विद्यार्थी क्यो समझे?**

नया कुछ सीखने के लिए सदैव अपने को विद्यार्थी समझो। विद्यार्थी समझने से पढ़ाई पर भी ध्यान रहेगा।

## संत महात्मा और महानुभावों द्वारा प्रेरणा की विद्यापीठ सुख शांति समृद्धि पत्रिका का ११ वे वर्ष में प्रवेश

**प्रति,**

**परम प्रिय पाठक परिवार को प्रणाम,**

आज के शुभ अवसर पर बहोत सारी बातें करनी है लेकिन फिर कभी।

२०१२ में सुख शांति समृद्धि पत्रिका का प्रारंभ राजयोगिनी जानकी दादीजी के विशेषांक से हुआ और पत्रिका का ११ वे वर्ष में प्रवेश राजयोगिनी रतनमोहिनी दादीजी के विशेषांक से हो गया तथा ब्रह्माकुमारी की पीस ऑफ माइंड टीवी चैनल प्रारंभ करने के पर्व पर भी मैंने मेरा श्रेष्ठ योगदान देने की भूमिका बढ़िया तरीके से अदा की ये सारा मेरा सौभाग्य है। करुणाभाईजी की कृपा हैं। जितने भी शब्दों में उनका आभार माने उतने शब्द पर्याप्त नहीं है।

भारत में जितनी भी धार्मिक-आध्यात्मिक संस्थाएं है उनकी मीडिया संबंधित प्रवृतियों में सब से प्रथम, सब से श्रेष्ठ कार्य जिन्होंने किया है वो निर्विवाद ब्रह्माकुमारी संस्था ही है और इसका श्रेय ऐसी प्रेरक मीडिया प्रवृतिओ के भीष्मपितामह और ब्रह्माकुमारी मीडिया

प्रभाग के मुखिया परम ज्ञानी आदरणीय श्री करुणा भाईजी को जाता है ये बात हम जैसे धार्मिक पत्रकारिता के साथ बरसो से जुड़े पत्रकार ही अच्छी तरह से समझ सकते हैं। आखिर में मैं आशा करता हूं की राजयोगी बी.के. करुणाभाई जी प्रेरित आज के इस अनोखे विशेषांक से वंदनीय दादी रतनमोहिनीजी के दिव्य व्यक्तित्व की विशेषता और अलौकिक विचारों से जीवन की कई समस्याओं का हल प्राप्त करने की ईश्वरीय प्रेरणा समाज को प्राप्त होगी।

प्रणाम। ओम शांति

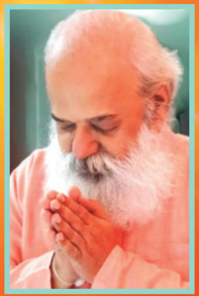

जीतु सोमपुरा, संपादक :
सुख शांति समृद्धि पत्रिका
(मो.नं. 9324446487)

## हमेशा युवापन चाहिए अर्थात सदा उमंग-उत्साह शक्ति से भरपूर जीवन चाहिए : दादी रतनमोहिनीजी

**प्रश्न: दादीजी, आप सो साल की उम्र के करीब जा रहे है तब भी आज का युवा आप से प्रभावित क्यों होता है?**

**राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी :**

युवा वैसे तो शरीर की अवस्था के आधार पर माना जाता क्योंकि उस समय उसमें शारीरिक शक्ति अधिक होती है। लेकीन युवा अवस्था तो है परंतु स्थिति भी है। तो इसमें उम्र की बात नहीं। हम तो कहेंगे कि हमेशा युवापन चाहिए अर्थात सदा उमंग-उत्साह शक्ति से भरपूर जीवन चाहिए। हमारी शारीरिक आयु इतनी है पर कभी फील भी नहीं होता है की हम युवा नहीं। बाबा ने हमारी स्टूडेंट लाइफ रखी है तो हम सदा अपने को स्टूडेंट समझने से अपने में वही एनर्जी अनुभव करते है। बीते वर्षों से युवाओं का रुझान आध्यात्मिकता की ओर आगे बढ़ा है। भौतिकता के भ्रमजाल से वे निकलना चाहते हैं।

सच्ची शांति, सुकुन, सच्चे प्रेम की उन्हें तलाश है तो ऑटोमैटिक उन्हें यहां मिलती है। फिर वे आध्यात्मिक बातो को सुनते है, समझते और स्वीकार भी करते है।

## ईश्वरीय ज्ञान मिलने के बाद मुझे अनुभव होने लगा था कि मै अभी लौकिक घर की नहीं रही लेकीन ईश्वर की ही हो गई हूं: राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी

**प्रश्न: हम चाहते है की हमारे पाठकों को अपने दिव्य स्मृतियों के खजाने से कुछ अनुपम मोती की प्रस्तुतियों के द्वारा आप बताए की ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी का किस तरह ईश्वरीय सेवा में जुड़ना हुआ?**

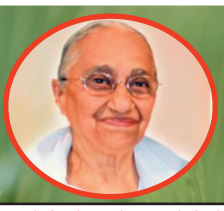

**वरिष्ठ राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी:**

मेरा जन्म सन् १९२५ में हैदराबाद-सिंध के एक सम्पन्न धार्मिक परिवार में हुआ। माता-पिता के भक्ति के संस्कार के प्रभाव से बचपन से ही मुझे भक्ति-पूजा का शौक था। जब में १० वर्ष की थी तो अचानक मेरे लौकिक पिता का देहांत हुआ जिससे माताजी अत्यन्त दुखी थी। घर में अशांत वातावरण व्यापक था।

एक दिन दीदी मनमोहिनीजी की लौकिक माँ क्वीन मदर, जो मेरी चाची लगती थी, हमारे घर माताजी से मिलन आयी। माताजी के दुखी और अशांत जीवन को देखकर क्वीन मदर ने

**लेकिन वो स्वप्न नहीं था वास्तव में बाबा साक्षात् विष्णु रूप दिखाई दिए थे**

कहा कि यहाँ पड़ोस में दादा के घर बहुत अच्छा सत्संग चलता है, वहाँ जो जाता है, दुनिया के सब दुख भूल जाता है। क्वीन मदर के आग्रह से दूसरे ही दिन मैं और लौकिक माताजी दादा के घर सत्संग करने गई। वहाँ जाते ही जब मैंने दादा अर्थात् ब्रह्माबाबा को देखा तो बाबा का शरीर गुम होकर विष्णु का साक्षात्कार हुआ। मुझे लगा कि मैं स्वप्न ता नहीं देख रही हूँ लेकिन वो स्वप्न नहीं था वास्तव में बाबा साक्षात् विष्णु रूप दिखाई दिए थे। उसी समय से मेरा झुकाव ओममंडली की तरफ हो गया।

मेरी लगन निशिदिन चढ़ती कला में थी। मैं लौकिक पढ़ाई छोड़ना चाहती थी लेकिन बड़े भाई की तीव्र इच्छा थी कि पढ़ाई में आगे बढ़कर कोई अच्छी डिग्री प्राप्त करूँ। सत्संग में रुचि बढ़ने के कारण मैंने नवी कक्षा की परीक्षा के बाद जिद्द की कि मुझे पढ़ना ही नहीं है। फिर भी भाई ने बनारस युनिवर्सिटी में प्रवेश दिलाने के लिए बहुत प्रयास किया लेकिन प्रवेश नहीं मिला। मैं खुशी में नाचती थी कि सचमुच मुझे ईश्वर ने मदद की। वैसे मैं पढ़ाई में बहुत होशियार थी जिससे सदा क्लास में मेरा नंबर आगे रहता था। ईश्वरीय ज्ञान मिलने के बाद मुझे अनुभव होने लगा था कि मैं अभी लौकिक घर की नहीं रही लेकिन ईश्वर की ही हो गई हूँ। कुछ ही समय बाद मैंने अपना जीवन ईश्वरीयय सेवार्थ अर्पित कर दिया और समर्पित जीवन बिताने लगी।

## दादीजी ने परमात्मा प्रेम और विश्व सेवा में स्वयं को संपूर्ण समर्पित कर दिया हैं।

(पृष्ठ १ से)

के अभियान को ब्रह्माकुमारी संस्था के भाई-बहन आध्यात्मिकता के प्रचार द्वारा आगे बढ़ाएंगे।

वरिष्ठ राजयोगी बी.के. मृत्युंजयभाईजी ने दादीजी को जन्मदिन की बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा की बाबा का सपना, दादीजीओं का सपना, भारतवासियों का सपना, मोदीजी का सपना, गांधीजी का सपना स्वर्णिम भारत के निर्माण का सपना है। ब्रह्माकुमारी संस्था के सारे केंद्र इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए नशा, गुनाह, प्रदूषण, तनमन की बीमारी से भारत को मुक्त करते हुए देवभूमि बनाएंगे।

राजयोगिनी मोहिनी दीदी ने अपने प्रेरक प्रवचन में मुख्य मंत्री भूपेन्द्रभाई की और दादी रतनमोहिनीजी की विशेषताओं को याद करते हुऐ दोनो की सराहना की थी। उन्होंने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा था की भारत की आज की नेतागिरी ने समग्र विश्व में आकर्षण का निर्माण किया है। मैं दादीजी से आज भी हररोज मिलकर प्रेरणा लेती हू। हम सब को आदर्श जीवन बनाते हुऐ विश्व की सेवा में समर्पित होना है। सिर्फ वरदान ही काफी नहीं, वरदान से जो लक्ष्य प्राप्त होता है उसी के साथ हमे आगे बढ़ना है।

**गुजरात के मुख्य मंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल:**
ब्रह्माकुमारी संस्था का कार्य एक अनूठी मिसाल हैं।

**राजयोगी डॉ. बी.के. बनारसीभाईजी :**
१४ करोड़ लोग नशामुक्ति के बारे में शपथ लेंगे।

**राजयोगी डॉ. प्रतापभाई मिढ्ढा:**
जीवन के खालीपन की वजह से दुनिया नशे का शिकार है।

**राजयोगी बी.के. मृत्युंजयभाईजी :**
ब्रह्माकुमारी संस्था के सारे केंद्र स्वर्णिम भारत की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

**राजयोगिनी मोहिनी दीदीजी :**
हम सब को आदर्श जीवन बनाते हुए विश्व की सेवा में आगे बढ़ना है।

दादीजी के जन्मदिन के अवसर पर आबू मुख्यालय में खास पधारे गुजरात के मुख्य मंत्री भूपेन्द्रभाई पटेलने दादीजी को जन्मदिन की बधाई और शुभकामनाएं दी। दादीजी के नेतृत्व में ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा हुए सारे कार्यो और परिणामों की सराहना करते हुए कहा की दादीजी ने परमात्मा प्रेम और विश्व सेवा में स्वयं को संपूर्ण समर्पित कर दिया हैं। समग्र विश्व में परिवार की भावना का अच्छी तरह से संदेश जा रहा हैं। नशा मुक्ति, जल संरक्षण, युवा जागृति सहित विभिन्न सामाजिक जिम्मेदारी का तथा आध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार का हर संभव प्रयास संस्था के तमाम भाई-बहनें उत्तम तरीके से व्यापक प्रमाण में कर रहे हैं। ये अनूठी मिशाल है।

दादीजी ने अपने छोटे से आशीर्वाद संदेश में परमपिता परमात्मा को याद करते हुए सब का स्वागत किया।

मंच पर समय मर्यादा का खयाल में रखते हुए संस्थान के अग्रणी राजयोगी भाई और राजयोगिनी बहन ने परिसर में मौजूद रहकर आर्दश दृष्टांत प्रस्तुत किया था।

## राजयोगिनी दादी रतनमोहिनीजी:

- हर्षितमुख आत्मा सदा उर्जावान रही है, जिससे वह दूसरों के चहरे पर मुस्कान ले आती है।
- अगर कोई हमारी गलती हमें बताता है, तो उसे तुरंत जवाब नहीं दो बल्कि उसको स्वीकार कर परिवर्तन करने की कोशिश करें।
- कोई भी स्वइच्छा से दुखी होना नहीं चाहता है। लोग दुखी होते है, जब वे किसी व्यक्ति अथवा चीजवस्तुओं से प्रभावित हो जाते है।
- प्रयास सफलता की चाबी है जब आप पहली बार पहाड चढ़ते है तो बहुत महेनत का अनुभव करते है। लेकिन पहाड पर बार बार चढ़ने के प्रयास से वह आसान लगता है।

बी.के. अशोक कुमार उपाध्याय | माताजी बी.के. शरवती उपाध्याय
(पांडव भवन, माउन्ट आबू, राजस्थान)

**हम आभारी हैं इस अंक के सहयोगी के**

# 2023-24 सुख शांति समृद्धि

मोबाइल पर सुख शांति समृद्धि पत्रिका बिना मूल्य प्राप्ति हेतु Whatspp करे 9324446487

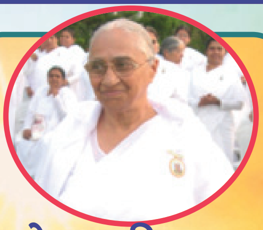

भले बाहर की व्यस्तता हो, लेकिन अंदर से शांत हो एसा जीवन जिये।

## APRIL

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

## MAY

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | 31 | | | |

मन में भारीपन हमें उत्साह के साथ आगे बढ़ने से रोकता है।

## JUNE

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

सभी परिस्थितियों में हर्षितमुख रहने के लिए मुझे न्यारा रहने का अभ्यास करने की आवश्यकता है।

शुद्ध सकारात्मक और उत्तम विचार ही जीवन में शांति और खुशी के लिए मूल आधार है।

## JULY

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | 31 | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

शायद क्रोध से कभी कार्य में सफलता मिल सकती है, लेकिन प्रेम और करुणा के गुण लंबे समय तक सफलता दिला सकते है।

## AUGUST

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

## SEPTEMBER

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

अपने विचारों को सही दिशा प्रदान करने से कोई भी बडी या छोटी चुनौतीयों में आप अवश्य सफल होंगे।

## OCTOBER

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 | | | | |

अपने जीवन यात्रा का आनंद लेने के लिए अपने और अपने आसपास के लोगों की सराहना करने की आदत डालें।

खुशी ना रहने का एक मुख्य कारण है, बहुत ज्यादा सोचना।

## NOVEMBER

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | | |

यदि आप गलती करते है तो आप सच्चाई के साथ उसमें से सीख (शिक्षा) लेकर आगे बढ़ें।

## DECEMBER

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

## 2024 JANUARY

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | 31 | | | |

परमात्मा से शक्ति प्राप्त करने के लिए मौन में रहने की शक्ति को बढ़ाना होगा।

## FEBRUARY

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | | |

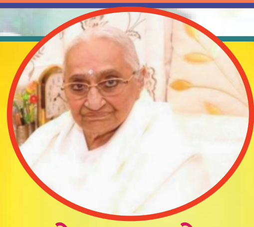

अपने तनाव को कम करने के लिए अपने संकल्पों पर ध्यान दें।

समस्याओं के बजाए समाधान के बारे में निरंतर विचार करें।

## MARCH

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |